

## SCROLL DOWN FOR ENGLISH PRESS NOTE

प्रेस विज्ञप्ति: 12 अगस्त 2022

वन संरक्षण कानून में प्रस्तावित नियम 2022 – हिमालय व लोकतंत्र के लिए विनाशकारी !

8 हिमालयी राज्यों के 60 से अधिक संगठनों और पर्यावरणविदों ने केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय को भेजा ज्ञापन

हिमालयी क्षेत्र के राज्यों के 60 से अधिक पर्यावरण समूहों, संगठनों, प्रख्यात विचारकों, बुद्धजीवियों और कार्यकर्ताओं ने हिमालयी क्षेत्र में बढ़ते पारिस्थितिकीय संकट और पर्यावरणीय दुर्गति को रोकने, जनजातीय समूह व वन निवासियों के अधिकारों को सुनिश्चित करने और केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEF&CC) द्वारा वन संरक्षण कानून में प्रस्तावित नियमों को रद्द करने की मांग की है। मंत्रालय द्वारा यह विवादास्पद कदम कंपनियों और विकास परियोजनाओं को मजबूती से आगे बढ़ाने और ग्राम सभाओं की NOC को रोड़ा मानते हुए दरकिनार करने का प्रयास है जिसका पुरजोर विरोध हुआ है।

आज हिमालय में जलवायु परिवर्तन संबंधित आपदाओं, वनों के दोहन, विलुप्त होती जैव विविधता, भुसखलन, नदियों के सूखने, खतम होते भूजल स्रोतों, ग्लेशियरों के पिघलने, पहाड़ों के खोखले किये जाने व ठोस और संकटमय कचरे से संबंधित प्रदूषण जैसी समस्याएं आम हैं और यहाँ कि पर्यावरणीय स्थिति अत्यंत सर्वेदनशील है। पहले से ही हिमालय क्षेत्र पारिस्थितिकीय और भौगोलिक रूप से अत्यंत नाजुक होने के लिए जाना जाता है, जहां प्रकृति से छोटी सी छेड़छाड़ भी व्यापक असर डालती है जिसका लाखों-करोड़ों लोगों के जीवन पर तीव्र प्रभाव पड़ता है।

पिछले कुछ सालों में पर्यावरणीय मानदंडों और सामाजिक जवाबदेही के प्रावधानों के बढ़ते उल्लंघन जिसमें से एक रही पर्यावरणीय प्रभाव आकलन प्रक्रिया में कम होती लोकतांत्रिक जन-भागीदारी ने इस स्थिति को और गंभीर कर दिया है। ऐसे में वन संरक्षण कानून के नियमों में 2017 में हुआ संशोधन जिसमें वन अधिकार कानून के तहत NOC लेने का प्रावधान जोड़ा गया था, पर्यावरण मंत्रालय द्वारा लिया गया एक आशारूपी कदम था। लेकिन इस बार के प्रस्तावित नियमों के अनुसार परियोजना के दूसरे चरण के बाद ग्राम सभा कि NOC लेने का प्रावधान न सिर्फ देश कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर सवाल उठता है बल्कि मंत्रालयों में बैठे नीति निर्माताओं कि मंशा और मंत्रालयों के अस्तित्व पर भी सवाल खड़ा करता है।

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय जिले किन्नौर में चल रहे नॉ मीन्स नॉ कैंपेन से जुड़े सुंदर नेगी कहते हैं कि “एक तरफ देश का राष्ट्रपति एक आदिवासी को चुना गया और दूसरी तरफ आदिवासियों के अधिकारों को इस तरह से कमजोर किया जा रहा है। इसी तरह से चलता रहा तो ट्राइबल क्षेत्र सिर्फ मानचित्र पर ही नजर आएगा और हिमाचल का हमारा छोटा सा ट्राइबल क्षेत्र जो अपनी संस्कृति, पर्यावरण, बोली, परंपरा, और अपनी पहचान को बड़ी-2 कंपनियों को भेंट चढ़ने से नहीं रोक पाएगा। अंततः हमारा देश और प्रदेश अपने प्राकृतिक संसाधनों और मानव समाज के संतुलन को खो बैठेगा जो सबके लिए बहुत बड़ा नुकसान साबित होगा। हमारे क्षेत्र कि नदियां तो टनलों में नजर आएंगी, प्राकृतिक आपदाएं बढ़ेंगी और सीमांत इलाकों में लोगों में रोष का माहोल रहेगा”।

डॉ. राजा मुज़फ्फर भट, संस्थापक एवं अध्यक्ष, जम्मू कश्मीर RTI आंदोलन का कहना है कि “वन अधिकार अधिनियम लागू होने के 13 साल बाद इसे जम्मू कश्मीर में लागू किया गया था और वन संरक्षण कानून में संशोधन करके जम्मू कश्मीर के आदिवासी और अन्य पारंपरिक वन निवासियों को फिर से एफआरए के तहत उनके अधिकारों से वंचित किया जाएगा”।

“नए FCA नियम 2022 अरुणाचल प्रदेश में आदिवासी समाज द्वारा हो रहे बड़े बांध विरोधी आंदोलन के सामने खतरा है क्योंकि ये लोगों से पहले राज्य कि सहमति को प्राथमिकता देते हैं। चूंकि राज्य सरकार द्वारा राज्य में जल विद्युत कंपनियों के साथ 140 से अधिक समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए थे, इसलिए एफसीए नियम राज्य द्वारा जमीनी स्तर पर लोगों की आवाज का प्रतिनिधित्व करने का कोई अवसर नहीं देते हैं। इन परियोजनाओं के माध्यम से हमारे राज्य पर भारी सांस्कृतिक और पारिस्थितिक आपदा मंडरा रही है, जिससे असम और बांग्लादेश के निचले इलाकों को भी खतरा है।” अरुणाचल प्रदेश के दिबांग रेजिस्टेंस ग्रुप के एक सदस्य ने कहा।

इस संकट के मद्देनजर अरुणाचल प्रदेश, असम, उत्तराखंड, जम्मू कश्मीर, हिमाचल, सिक्किम, मेघालय और मणिपुर के हस्ताक्षरकर्ताओं ने वन संरक्षण कानून- प्रस्तावित नियम 2022 को तत्काल रद्द करने की मांग की है। वे आज के वन प्रबंधन और शासन प्रणाली के टॉप-डाउन दृष्टिकोण से एक अधिक समावेशी, भागीदारी और 'न्यायपूर्ण' वन शासन की ओर बढ़ते बदलाव की मांग करते हैं - जिसे केवल एफआरए और इसी तरह के कानूनों / विनियमों के कार्यान्वयन के बाद ही शुरू किया जा सकता है।

ज्ञापन की प्रति संलग्न है

हस्ताक्षरकर्ता:-

### **Arunachal Pradesh**

1. Dibang Resistance Group
2. Jarjum Ete, President Emeritus, All India Union of forest working people
3. Bhanu Tatak, Independent Artist
4. Ebo Mili, Arunachal Pradesh
5. Eja Pulu, Arunachal Pradesh
6. Rakhini Mipi, RTI Activist, Arunachal Pradesh

### **Assam**

7. Chao Basant Gogoi, President, ATASU Kamrup (M) Guwahati, Assam
8. Pranab Doley, Assistant Secretary, All India Kisan Sabha, State Council, Assam

### **Himachal Pradesh**

9. Abha Bhaiya, Jagori, Himachal Pradesh
10. Action Association, Chamba, Himachal Pradesh
11. Bhumiheen Bhumi Adhikar Manch, Himachal Pradesh
12. Birbal Chauhan, Action Aid, Himachal Pradesh
13. Ekal Nari Shakti Sangathan, Himachal Pradesh
14. Gulab Singh, Dhaniram Sharma, Sirmaur Van Adhikar Manch, Sirmaur, Himachal Pradesh
15. Himalaya Awakening Society, Himachal Pradesh
16. Himdhara Environment Research and Action Collective, Palampur, Himachal Pradesh
17. Himalaya Niti Abhiyan, Himachal Pradesh
18. Himachal Queer Foundation, Himachal Pradesh
19. Jeevan Singh, Kisan Sabha, Sirmaur, Himachal Pradesh
20. Jiya Lal Negi, Zila Van Adhikar Sangharsh Samiti, Kinnaur, Himachal Pradesh

21. Kulbhushan Upmanyu, Himalay Bachao Samiti, Chamba, Himachal Pradesh
22. Manoj Kumar, Chamba Van Adhikar Manch, Himachal Pradesh
23. Naresh Negi, Member, Kishau Bandh Sangharsh Samiti, Sirmaur, Himachal Pradesh
24. NS Chankum, Himlok Jagriti Manch Kinnaur, Himachal Pradesh
25. No Means No Campaign, Kinnaur, Himachal Pradesh
26. Parvatiya Mahila Adhikar Manch, Palampur, Himachal Pradesh
27. Prem Katoch, Lahaul, Himachal Pradesh
28. Rigzin Hayerpa, Save Lahaul Spiti Society, Lahaul, Himachal Pradesh
29. Sambhavanaa Institute, Palampur, Himachal Pradesh
30. Santosh, All India Democratic Women's Association, Sirmaur, Himachal Pradesh
31. Shyam Singh, Secretary, CPI, State Council, Himachal Pradesh
32. SUTRA, Himachal Pradesh
33. Uma Mahajan, Himachal Van Adhikar Manch

### **Jammu & Kashmir**

34. Centre For Conservation of Culture and Heritage, J&K
35. Dr. Raja Muzaffar Bhat, Dr. Sheikh Rasool Gulam, J&K RTI Movement, J&K
36. Dr. Rouf Mohiudeen Malik, Director, KOSHISH, J&K
37. Peoples' Environmental Council, J&K

### **Manipur**

38. Jiten Yumnam, Centre for Research and Advocacy, Manipur

### **Meghalaya**

39. Joannes JTL Lamare, Shillong, Meghalaya

### **Sikkim**

40. Gyatso Lepcha, General Secretary, Affected Citizens of Teesta, Sikkim

### **Uttarakhand**

41. Anita Paul, Pan Himalayan Grassroots Development Foundation
42. Ajay Rastogi, Ranikhet, Uttarakhand
43. Ayushi Joshi, Environmental Technologist & Researcher, Uttarakhand
44. Bharat Jhunjunwala, Economist & Environmentalist, Uttarakhand
45. Chetna Andolan, Uttarakhand
46. Dr. Satish C. Aikant, Former Professor & HOD English, HNB Garhwal University, Mussoorie, Uttarakhand
47. Emmanuel Theophilus, Village Sarmoli, Munsiri, Uttarakhand
48. Ishwari Joshi, Sarpanch Sangathan, Almora, Uttarakhand
49. Kamal Sunal, Van Panchayat Sangharsh Morcha, Ramgarh, Uttarakhand
50. Kavita Upadhyay, Independent Environmental Journalist/ Researcher, Nainital, Uttarakhand

51. Lalit Upreti, Eco Sensitive Zone Sangharsh Morcha, Ramnagar, Uttarakhand
52. Manish Kumar, Samajwadi Lok Manch, Ramnagar, Uttarakhand
53. Mallika Viridi, Chairperson, Van Panchayat Paramarshdatri Samiti, Munsiyari, Uttarakhand
54. Mohammad Shafi, Van Panchayat Sangharsh Morcha, Ramnagar, Uttarakhand
55. Navin Joshi, Writer and Journalist, Uttarakhand
56. Prof. Mukul Sharma, Ashoka University, Uttarakhand
57. Rajendra Singh Bisht, Bhalu Gaad Jal Prapat Samiti, Dhari, Nainital, Uttarakhand
58. Rajeev Nayan Bahuguna, Senior Journalist & Environmentalist, Dehradun, Uttarakhand
59. Shankar Khadayat, Mahakali Ki Awaz, Pithoragarh, Uttarakhand
60. Surendra Arya, Mahakali Lok Sangathan, Pithoragarh, Uttarakhand
61. Saraswati Joshi, Mahila Ekta Manch, Uttarakhand
62. Shekhar Pathak, Padmashree awardee, Historian & Writer, Founder PAHAR, Uttarakhand
63. Van Panchayat Sangharsh Morcha, Nagriganv, PO Bhavali, Nainital, Uttarakhand

\*\*\*\*\*

Press note: 12 August 2022

## **Proposed Forest Conservation Act Rules, 2022 – Destructive for the Himalayas and Democracy!**

### **“Withdraw proposed FCA rules 2022”: More than 60 organizations and environmentalists from Himalayan region send joint memorandum to the Environment Ministry**

More than 60 environmental groups, organizations, eminent thinkers, intellectuals and activists from the states of the Himalayan region have demanded withdrawal of the proposed rules in the Forest Conservation Act (FCA) from the Ministry of Environment, Forest & Climate Change (MoEF&CC) in order to prevent the growing ecological crisis and forest degradation in the Himalayan region and to ensure the rights of indigenous communities and forest dwellers. This controversial move by the ministry is an attempt to push companies and development projects vigorously and bypass the NOC of Gram Sabhas which is considered a hindrance, and has been strongly opposed. The memorandum also tackled the bureaucratic decision making devoid of multi-disciplinary perspectives, disregards for indigenous knowledge systems, and the rigid non-democratic manner in which these amendments, rules and proposals are being put in front of citizens.

Today in the Himalayas, problems such as climate change related disaster risk, deforestation, loss of biodiversity, landslides, drying up of rivers, depleting ground water sources, melting glaciers, hollowing of mountains and pollution related to solid and hazardous waste are set to become a new normal. Already the Himalayan region is known to be ecologically sensitive and

geologically fragile, where even small tampering with nature can have a huge impact on the lives of millions of local inhabitants.

In the last few years, increasing violations of environmental norms and gaps in provisions of social accountability, one of which is the decreasing democratic public participation in the environmental impact assessment process, has aggravated the situation. Within such a context, the amendment made in the rules of the FCA in 2017 towards the provision of Gram Sabha NOC under the Forest Rights Act, 2006 was added, was a promising step taken by the MoEFCC. But according to the proposed rules this time, the provision of taking NOC of Gram Sabha after the second phase of the project not only raises questions on the democratic processes followed in the country but also raises questions on the intention of the policy makers sitting in the ministries and the existence of such ministries.

**A volunteer from Dibang Resistance Group from Arunachal Pradesh said that** *“New FCA rules 2022 threatens our indigenous movement against hydropower in Arunachal Pradesh as it prioritizes state consent before the people. Since more than 140 MoUs were signed by the state govt with hydropower companies in the state, FCA rules give no opportunity for the grassroots people’s voices to be represented by the state. Massive cultural and ecological disaster looms upon our state via these HEPs that also threatens downstream Assam and Bangladesh”.*

*“Hydropower projected as renewable or green energy undermines the massive scale of destruction in cultural and ecological integrity of people and places as witnessed historically across the globe hence the government should understand, publicly acknowledge and implement through policy and education that Hydropower is not renewable anymore”,* they added.

**Dr. Raja Muzaffar Bhat, Founder of the J&K RTI Movement, Kashmir** said *“The Forest Rights Act was rolled out in Jammu Kashmir after 13 years of its enactment and by amending the FCA tribal people of Jammu Kashmir and other Traditional Forest Dwellers will be again deprived of rights under FRA”.*

**Sunder Negi, a member of No Means No Campaign, Kinnaur, Himachal Pradesh** says that *“On one hand a tribal has been elected as the President of the country and on the other hand the rights of tribals are being undermined in this way. If this continues, then the tribal area will be visible only on the map and the small tribal area like kinnaur of Himachal, will not be able to stop its culture, environment, dialect, tradition, and its identity from being presented to the big companies. Eventually our country and state will lose the balance of its natural resources and human society, which will prove to be a great loss for all. The rivers of our region will be seen in the tunnels, natural calamities will increase and there will be an atmosphere of anger among the people in the border areas.”*

**In the wake of this crisis, the signatories of Arunachal Pradesh, Assam, Uttarakhand, Jammu & Kashmir, Himachal, Meghalaya, Manipur and Sikkim have demanded immediate repeal of the Forest Conservation Act - Proposed Rules 2022. They demand an incremental shift from top-down approach of today’s forest management and governance**

**system towards a more inclusive, participatory and 'just' forest governance – which can only be initiated post implementation of FRA and similar laws/regulations.**

**copy of the memorandum is attached**

**Signed by:-**

**Arunachal Pradesh**

1. Dibang Resistance Group
2. Jarjum Ete, President Emeritus, All India Union of forest working people
3. Bhanu Tatak, Independent Artist
4. Ebo Mili, Arunachal Pradesh
5. Eja Pulu, Arunachal Pradesh
6. Rakhini Mipi, RTI Activist, Arunachal Pradesh

**Assam**

7. Chao Basant Gogoi, President, ATASU Kamrup (M) Guwahati, Assam
8. Pranab Doley, Assistant Secretary, All India Kisan Sabha, State Council, Assam

**Himachal Pradesh**

9. Abha Bhaiya, Jagori, Himachal Pradesh
10. Action Association, Chamba, Himachal Pradesh
11. Bhumiheen Bhumi Adhikar Manch, Himachal Pradesh
12. Birbal Chauhan, Action Aid, Himachal Pradesh
13. Ekal Nari Shakti Sangathan, Himachal Pradesh
14. Gulab Singh, Dhaniram Sharma, Sirmaur Van Adhikar Manch, Sirmaur, Himachal Pradesh
15. Himalaya Awakening Society, Himachal Pradesh
16. Himdhara Environment Research and Action Collective, Palampur, Himachal Pradesh
17. Himalaya Niti Abhiyan, Himachal Pradesh
18. Himachal Queer Foundation, Himachal Pradesh
19. Jeevan Singh, Kisan Sabha, Sirmaur, Himachal Pradesh
20. Jiya Lal Negi, Zila Van adhikar Sangharsh Samiti, Kinnaur, Himachal Pradesh
21. Kulbhushan Upmanyu, Himalay Bachao Samiti, Chamba, Himachal Pradesh
22. Manoj Kumar, Chamba Van Adhikar Manch, Himachal Pradesh
23. Naresh Negi, Member, Kishau Bandh Sangharsh Samiti, Sirmaur, Himachal Pradesh
24. NS Chankum, Himlok Jagriti Manch Kinnaur, Himachal Pradesh
25. No Means No Campaign, Kinnaur, Himachal Pradesh
26. Parvatiya Mahila Adhikar Manch, Palampur, Himachal Pradesh
27. Prem Katoch, Lahaul, Himachal Pradesh
28. Rigzin Hayerpa, Save Lahaul Spiti Society, Lahaul, Himachal Pradesh
29. Sambhavanaa Institute, Palampur, Himachal Pradesh
30. Santosh, All India Democratic Women's Association, Sirmaur, Himachal Pradesh
31. Shyam Singh, Secretary, CPI, State Council, Himachal Pradesh

32. SUTRA, Himachal Pradesh
33. Uma Mahajan, Himachal Van Adhikar Manch

### **Jammu & Kashmir**

34. Centre For Conservation of Culture and Heritage, J&K
35. Dr. Raja Muzaffar Bhat, Dr. Sheikh Rasool Gulam, J&K RTI Movement, J&K
36. Dr. Rouf Mohiudeen Malik, Director, KOSHISH, J&K
37. Peoples' Environmental Council, J&K

### **Manipur**

38. Jiten Yumnam, Centre for Research and Advocacy, Manipur

### **Meghalaya**

39. Joannes JTL Lamare, Shillong, Meghalaya

### **Sikkim**

40. Gyatso Lepcha, General Secretary, Affected Citizens of Teesta, Sikkim

### **Uttarakhand**

41. Anita Paul, Pan Himalayan Grassroots Development Foundation
42. Ajay Rastogi, Ranikhet, Uttarakhand
43. Ayushi Joshi, Environmental Technologist & Researcher, Uttarakhand
44. Bharat Jhunjhunwala, Economist & Environmentalist, Uttarakhand
45. Chetna Andolan, Uttarakhand
46. Dr. Satish C. Aikant, Former Professor & HOD English, HNB Garhwal University, Mussoorie, Uttarakhand
47. Emmanuel Theophilus, Village Sarmoli, Munsiri, Uttarakhand
48. Ishwari Joshi, Sarpanch Sangathan, Almora, Uttarakhand
49. Kamal Sunal, Van Panchayat Sangharsh Morcha, Ramgarh, Uttarakhand
50. Kavita Upadhyay, Independent Environmental Journalist/ Researcher, Nainital, Uttarakhand
51. Lalit Upreti, Eco Sensitive Zone Sangharsh Morcha, Ramnagar, Uttarakhand
52. Manish Kumar, Samajwadi Lok Manch, Ramnagar, Uttarakhand
53. Mallika Viridi, Chairperson, Van Panchayat Paramarshdatri Samiti, Munsiyari, Uttarakhand
54. Mohammad Shafi, Van Panchayat Sangharsh Morcha, Ramnagar, Uttarakhand
55. Navin Joshi, Writer and Journalist, Uttarakhand
56. Prof. Mukul Sharma, Ashoka University, Uttarakhand
57. Rajendra Singh Bisht, Bhalu Gaad Jal Prapat Samiti, Dhari, Nainital, Uttarakhand
58. Rajeev Nayan Bahuguna, Senior Journalist & Environmentalist, Dehradun, Uttarakhand
59. Shankar Khadayat, Mahakali Ki Awaz, Pithoragarh, Uttarakhand
60. Surendra Arya, Mahakali Lok Sangathan, Pithoragarh, Uttarakhand

61. Saraswati Joshi, Mahila Ekta Manch, Uttarakhand
62. Shekhar Pathak, Padmashree awardee, Historian & Writer, Founder PAHAR, Uttarakhand
63. Van Panchayat Sangharsh Morcha, Nagriganv, PO Bhavali, Nainital, Uttarakhand